



ISSN: 2249-894X  
 IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)  
 UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514  
 VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019



## बौद्ध धर्म में सम्यकता का महत्व

डॉ. सुषमा नयाल

समाजशास्त्र विभाग ,  
 एस.एम.जे.एन.(पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार.

### सारांश-

बौद्ध धर्म को अवैदिक माना जाता है, क्योंकि बौद्ध धर्म निरीश्वरवादी व बुद्धजीवी धर्म है, बौद्धमत में स्वर्ग प्राप्ति धर्म का अन्तिम लक्ष्य नहीं है, एवं उपासना विधियों के स्थान पर समाधि, ध्यान को प्रधानता दी गयी है। बौद्धधर्म में जातीय संस्तरण को मान्यता नहीं है। यज्ञ आदि कार्यों की भी मान्यता गौण है, इस कारण बौद्धमत अवैदिक माना जाता है। बुद्ध काल में उच्छेदवाद व शाश्वतवाद दो दर्शन प्रचलित थे, उच्छेद अर्थात् शरीर समाप्ती के साथ आत्मा समाप्ती का मत एवं शाश्वत् अर्थात् शरीर समाप्ती पर भी आत्मा की अजरता-अमरता का मत। इस प्रकार बौद्ध धर्म न तो उच्छेदवादी (Excisionism) न शाश्वतवादी (Eternalism)

है, वरन् यह दोनो मतों के मध्य का सम्यक मत है इस कारण यह मध्यमवर्गीय धर्म कहलाता है। बौद्धमत में व्यक्तियों की दुःख मुक्ति कैसे सम्भव हो इसके लिए आष्टांगिक मार्ग का विधान बताया गया है, आष्टांगिक मार्ग के अन्तर्गत आठ मार्गों का विधान दिया गया है, एवं सभी आठों मार्गों में सम्यकता को अपनाने के निर्देश देते हैं।

### प्रस्तावना-

भारतीय धर्म में नवचेतना व सामाजिक धार्मिक सुधार के रूप में बौद्ध धर्म का आगमन हुआ। बुद्धकालीन समाज में अनेक कुप्रथायें थीं, जैसे-अंधविश्वास, बुहदेववाद, जात-पात, शुभ-अशुभ, कर्मकाण्ड, वर्णजाति व्यवस्था, शूद्रों की निम्नतर स्थिति, वेद उपनिषद का अध्ययन करने का सामान्य लोगों को अधिकार नहीं था, शूद्रों को शमशानादि से भी अपवित्र माना जाना,<sup>(1)</sup> वैदिक मंत्रों के उच्चारण पर जिह्वा दण्ड के निर्देश,<sup>(2)</sup> वैदिक मंत्र सुनने वाले शूद्र हेतु दण्ड विधान,<sup>(3)</sup> आदि अबौद्धिक गैरबराबरी की बातों ने समाज में बौद्धिक संकट खड़ा कर दिया, साथ ही बौद्धिक एवं तार्किक

धर्म के उच्च आदर्श दर्शन, आत्म परमात्म, मोक्ष-मुक्ति, स्वर्ग-नरक की आध्यात्मिक धारणाओं से सामान्य जन अत्यन्त दूर होते हुए वंचित रह रहा था। ऐसे समय में उस दर्शन व धर्म की नितान्त आवश्यकता थी, जो जनसाधारण के जीवन का अंग बन धार्मिक धारणाओं के माध्यम से सामान्य जन के मन को निकट ला सके। फलस्वरूप बुद्ध द्वारा उन्हीं धार्मिक अवधारणाओं को विकसित किया गया जो जनमानस के अनुकूल हो सकें। बौद्ध काल में उच्छेद एवं शाश्वत् दो दर्शन चलन में थे बौद्ध इन्ही दोनो का सन्तुलन है।

**उच्छेदवादी दर्शन (Excisionism)** के अनुसार मृत्योपरान्त आत्म का पूर्ण उच्छेद

अथवा विनाश हो जाता है, चार्वाक के दर्शन का आधार उच्छेदवाद दर्शन कहा जाता है, इनके मतानुसार देह भस्म होने के बाद आत्मा का भी विनाश हो जाता है (भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः)।<sup>(4)</sup> **शाश्वतवादी दर्शन (Eternalism)** के अनुसार आत्मा नित्य व शाश्वत् है, क्योंकि उनके पुनर्जन्म होते हैं, यदि आत्मा की समाप्ति सम्भव होती तो पुनर्जन्म किसका? व कैसे? सम्भव हो पाता, अतः आत्मा कभी समाप्त नहीं होती, अजरता उसकी विशेषता है। आत्मा एवं इदं सर्वम्।<sup>(5)</sup> अर्थात् आत्मा ही सब कुछ है। मनुष्य व प्राणियों की जीवात्मा अनादि एवं अनन्त है। यह अजन्मा, अनादि, नित्य, शाश्वत् अर्थात् निरन्तर चेष्टाशील सनातन

तत्व है।<sup>(6)</sup> इस कारण **बौद्धमत** मध्यमवर्गीय है, यह उच्छेद को सत्य नहीं मानता, चूंकि जीवात्मा का पुनर्जन्म होता है, एवं शाश्वतवाद इसलिए सत्य नहीं हो सकता क्योंकि निर्वाण में आत्मा संरक्षित नहीं हो सकती है। यदि आत्मा शाश्वत है तो निर्वाण एवं मुक्ति किसको व किसकी होगी। बौद्धमत तपश्चर्या व सुखवाद के बीच का मार्ग अपनाता है।

**अवधारणात्मक विश्लेषण—सम्यकता** का तात्पर्य है “ना अधिक ना कम” अर्थात् सन्तुलन से है। बुद्ध की शिक्षा का आधार व मानव को दुःख, तृष्णा, लालच, मोह, विकारों से शमन का मार्ग है सम्यक् होना, सम्यक् ही वह आधार माना गया है जिसको अपनाकर मानव दुःख का अन्त सम्भव है, स्पष्ट है कि बुद्ध का अर्थ ही है सम्यक् होना।

### अध्ययन के उद्देश्य—

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं—

1. सम्यकता का वैज्ञानिक विश्लेषण करना।
2. बौद्ध धर्म का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
3. बौद्ध धर्म की मध्यमार्गीयता की व्याख्या करना।
4. प्रतीत्यसमुत्पाद की विवेचना करना।

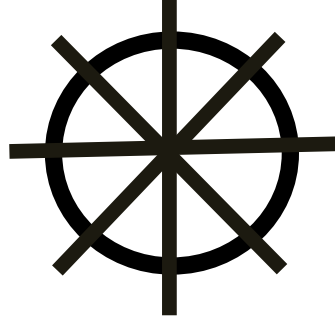
**बौद्ध के तीन मूल सिद्धान्त हैं—**प्रथम— सब कुछ दुःखमय है। दूसरा—सब कुछ क्षणिक है, स्थायी एवं नित्य आत्मा भी नहीं है, इसलिए अन्त में अनात्मवाद ही सत्य है। तीसरा— निर्वाण ही एकमात्र शांति गति है। इन तीनों सिद्धान्तों पर आधारित होकर बौद्धमत की चार प्रमुख शिक्षा हैं जिन्हें “**चत्वारि आर्य सत्यानी**” कहा जाता है, अर्थात् चार प्रमुख आर्य सत्य।

**बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धान्त (शिक्षाएँ)—**चत्वारि आर्य सत्यानी अर्थात् चार आर्य सत्य हैं, 1. सांसारिक जीवन दुःख से परिपूर्ण है, 2. दुःखों का कारण है, 3. दुःखों का अन्त है, 4. दुःख मुक्ति/विरोध का मार्ग है। **सांसारिक जीवन दुःख से परिपूर्ण है**, अर्थात् दुःख प्रथम आर्य सत्य है, दुःख सार्वभौमिक है, बुद्ध के अनुसार जन्म, जरा या वृद्धावस्था, व्याधी, मरण, प्रियमिलन, प्रेम, वियोग, इच्छित वस्तु न मिलना आदि सभी दुःख है। अतः संसार का कोई प्राणी दुःख से मुक्त नहीं है। **दुःखों का कारण है**, बुद्ध प्रतीत्यसमुत्पाद को स्वीकारते हैं, प्रतीत्यसमुत्पाद की मान्यता के अनुसार दुःख के कारण हैं, घटना की एक कड़ी से घटना की दूसरी कड़ी उत्पन्न होती है एवं दूसरी से तीसरी, जीवन की इन कड़ियों को ही प्रतीत्यसमुत्पाद कहते हैं। जिससे कि व्यक्ति कई प्रकार की इच्छा, तृष्णा, मोह के बंधनो से जुड़ जाता है। **दुःखों का अन्त है**, अर्थात् दुःखों का अन्त तृष्णा के अन्त में सम्भव है, इसी कारण निर्वाण मार्ग निर्मित होगा। निर्वाण दुःख समाप्ति का मार्ग है, अतः तृष्णा, वासना का विनाश करना एवं शून्य होना ही निर्वाण अवस्था है। बौद्ध धर्म में दुःखों का अंत आत्मज्ञान से ही सम्भव है।

**दुःख निरोध अथवा मुक्ति का मार्ग है**, चौथा आर्य सत्य दुःख मुक्ति हेतु आष्टांगिक मार्ग है, आष्टांगिक विधि मार्ग को अपनाकर एवं आत्मसात कर प्रत्येक व्यक्ति अपने दुःखों से मुक्त हो सकता है एवं आत्मविस्तार कर सकता है। दुःख निरोध मार्ग को बौद्ध मत में आष्टांगिक मार्ग कहा जाता है, क्योंकि इसमें आठ सम्यक् अंग हैं।

**सम्यक् का अभिप्राय—** आष्टांग मार्ग के सभी मार्ग सम्यक् शब्द से प्रारम्भ होते हैं। सम्यक् अर्थात् अच्छा, सही या सन्तुलित होना, अतः धर्मचक्र की आठ तिलियों द्वारा आष्टांगिक मार्ग को प्रस्तुत किया जाता है, जिसका चिन्ह आठ तिलियों का चक्र है, वह इस प्रकार है—

### बौद्ध आष्टांगिक मार्ग



चित्र संख्या-1

**सम्यक् दृष्टि :-** नीर-क्षीर विवेकी दृष्टि की सम्यक् दृष्टि होती है, वह दृष्टि जो सत्य-असत्य, सदाचार-दुराचार, का अन्तर स्पष्ट रूप से समझ सके, उसके सम्यक् दृष्टि कहा जाता है, जिसमें व्यक्ति अन्धों के प्रति एक जैसी समान दृष्टि रखते हुए समानता का भाव रखता है।

**सम्यक् संकल्प :-** आर्य सत्त्यों के अनुसार जीवन बिताने का संकल्प एवं दृढ़ निश्चय रखना सम्यक् संकल्प है। अन्य व्यक्तियों के प्रति हिंसा व घृणा का त्याग करना सम्यक् संकल्प के अन्तर्गत आता है, साथ ही ऐसा संकल्प जो सम्भव नहीं हो उसे करने से बचना चाहिए।

**सम्यक् वाक/वचन :-** झूठ, चुगली, कटु सत्य, अयथार्थ, असत्य, ब्यर्थ कथनों से बचना, सदा ही सत्य अनुसरण के वाक कहना ही सम्यक् वचन है।

**सम्यक् कर्मान्त :-** हिंसा, दुराचार व द्रोह सम्बन्धी कर्मों से बचना। अहिंसा, असत्य व इन्द्रियसंयम कर्मों पर चलने को सम्यक् कर्म कहा जाता है। अर्थात् वचन ही से नहीं वरन् दैनिक जीवन के व्यवहार में भी सन्तुलन व अच्छाई का होना सम्यक् कर्म है।

**सम्यक् आजीव :-** किसी भी व्यक्ति को अपनी जीविका निर्वाह के लिए सदैव उचित व मूल्यपरक उपाय अपनाना चाहिए, न्यायपूर्ण व्यवहार से जीविका उपार्जन करना, छल, कपट के तरीकों से धन अर्जन करने से बचना सम्यक् आजीविका है।

**सम्यक् व्यायाम-प्रयास :-** सद्विचारों को संरक्षित कर बुरे विचार एवं भावों को नियंत्रित कर शारीरिक सुखों की अति से बचना, आलसी व अभिलासिता से दूर रहकर श्रम को महत्व देना। वह कार्य, वह प्रयास जो बुरे भावों को उत्पन्न करे उनसे दूर रहना एवं व्यर्थ के प्रयासों से स्वयं को बचना सम्यक् प्रयास है।

**सम्यक् स्मृति :-** चित्त में अच्छे-बुरे के स्मरण में सम्यक्ता रखना। चित्त व चेतना में वह स्मृति जो वर्तमान को प्रभावित करे व अहंभाव को प्रभावित करे उनके अति स्मरण से बचना। लोभ, चित्त संताप, अति विषाद विचारों से दूर रहना ही सम्यक् स्मृति है। अतः अनुभूतियों के वास्तविक स्वरूप को समझना सम्यक् स्मृति का प्रमाण है।

**सम्यक् समाधि :-** सुख-दुःख से परे होकर "स्वयं"या"मैं"का अन्तः हो जाना समाधि का चरम है। वासनाओं का शमन करते हुए चित्त को स्थिर व एकाग्र रखना समाधि की स्थिति है। प्रज्ञा अथवा ज्ञान को ध्यान में रखकर सांसारिकता के प्रति उदासीन हो जाना व बिना किसी लालच व कामना के चित्त को स्थिर रखना समाधि का स्वरूप है। समाधि में राग, द्वेष, द्वन्द्व का विनाश होकर आनन्द एवं शान्ति की चेतना का भी अभाव हो जाता है।

### निष्कर्ष-

अतः जगत में भी सभी घटनायें प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार एक दूसरे पर निर्भर हैं। सभी घटनायें सापेक्ष हैं, जगत वास्तव में क्षणिक घटनाओं का ही प्रवाह मात्र है। अतः कोई भी वस्तु नित्य नहीं। जगत प्रतीत्य-समुत्पाद पर आधारित है तथा क्षणिकवादी है। वस्तुओं की स्थायी सत्ता मात्र व्यवहारिक रूप से सत्य प्रतीत होती है, किन्तु पारमार्थिक दृष्टि के कारण सभी वस्तुओं में क्षणभंगुरता का गुण है। बुद्ध के अनुसार संसार में दुःख में परिवर्तित होती है, जिन वस्तुओं, घटनाओं, विचारों, व्यक्तियों में आज हर्ष है वह विषाद में रूपान्तरित

होती हैं, शाश्वत् कुछ भी नहीं, सुख क्षणिक है, दुःख आर्य सत्य है, दुःखों के कारण हैं एवं दुःखों का अन्त सम्भव है। दुःख मिटाने की एक वैज्ञानिक विधि है वह है सम्यक् हो जाना। अर्थात् अति से बचते हुए व्यक्ति को स्मृति, कर्म, समाधि, प्रयास, वचन, संकल्प रचना चाहिए, समाजशास्त्रीय विश्लेषण से भी स्पष्ट है कि यदि व्यक्ति किसी भी कार्य में अति से बचे तो वह संतुलित जीवन व्यतीत करेगा। बुद्ध की सम्यक्ता में वैज्ञानिक तथ्य हैं।

### सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची-

1. वशिष्ठ धर्मसूत्र।
2. आपस्तम्भ धर्मसूत्र 1.3. 9.9, शूद्रा पब्लिकारोऽपि शम्या प्रासोन्नाऽध्येयम् यथा वशिष्ठ धर्मसूत्र, 18.11.12.
3. गौतम धर्मसूत्र 12.4.
4. लीलाधरशर्मा पाण्डेय, ज्ञानगंगोत्री, ओरियंट पेपरमिल्स, अमलाई म.प्र., पे.न. 138
5. छान्दोग्य उपनिषद् 7-25-2.
6. न जायते भ्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नितः शाश्वोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। श्रीमदभागवदगीता 2/20.